आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-128/2015-2017
प्रेषण :- कार्यालय शास्त्री सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांकः-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

● मुद्रण तारीख - 21-02-2016 ● अंक-441 ● तारीख - 22 फरवरी 2016, माघ शुक्ल पक्ष - पूर्णिमा ● सोमवार ● उदयपुर ● कुल पृष्ठ-02 ● मूल्य-1 रूपया ● पृष्ठ-01

जानिए बिल्व पत्र के बारे में महत्वपूर्ण बातें

भगवान शिव के पूजन में बिल्व पत्र का बहुत महत्व है। कहा जाता है कि बिल्व पत्र शिवजी को अतिप्रिय है। इसलिए भोलेनाथ को बिल्व पत्र अर्पित किया जाता है। लेकिन क्या आप जानते हैं बिल्व पत्र 6 महीने तक बासी नहीं माना जाता। इसे एक बार शिवलिंग पर चढ़ाने के बाद धोकर पुनः चढ़ाया जा सकता है। कई जगह शिवालयों में बिल्व पत्र उपलब्ध नहीं हो पाने पर इसके चूर्ण को चढ़ाने का विधान भी है।

बिल्व पत्र को औषधि के रूप में भी प्रयोग किया जाता है। इसमें निहित इगेलिन व इगेलेनिन नामक क्षार-तत्व औषधीय गुणों से भरपूर होते हैं। यह चातुर्मास में उत्पन्न होने वाली विभिन्न स्वास्थ्य समस्याओं से भी निजात दिलाता है। यह गैस, कफ और अपचन की समस्या को दूर करने में सक्षम है। इसके अलावा यह कृमि और दुर्गंध की समस्या में भी फायदेमंद है। प्रतिदिन सात बिल्व पत्र खाकर पानी पीने से कई बीमारियों से छुटकारा मिलता है। इसी प्रकार यह एक औषधि के रूप में भी काम आता है। मधुमेह रोगियों के लिए बिल्व पत्र रामबाण इलाज है। मधुमेह होने पर पांच बिल्व पत्र, पांच कालीमिर्च के साथ प्रतिदिन सुबह के समय खाने से अत्यधिक लाभ होता है। बिल्व पत्र के प्रतिदिन सेवन से गर्मी बढ़ने की समस्या भी समाप्त हो जाती है।

शिवलिंग पर प्रतिदिन बिल्व पत्र चढ़ाने से सभी समस्याएं दूर हो जाती हैं, भक्त को कभी भी पैसों की समस्या नहीं रहती है। बिल्व पत्र को तिजोरी में रखने से भी समृद्धि आती है। कुछ विशेष तिथियों पर बिल्व पत्र को तोड़ना वर्जित होता है। चतुर्थी, अष्टमी, नवमी, द्वदशी, चतुर्दशी, अमावस्या, पूर्णिमा, संक्रांति पर बिल्व पत्र का नहीं तोड़ना चाहिए। सोमवार के दिन बिल्व पत्र को नहीं तोड़ना चाहिए, इसमें शिवजी का वास माना जाता है। इसके अलावा प्रतिदिन दोपहर के बाद भी बिल्व पत्र नहीं तोड़ना चाहिए।

सुविचार

सच्चा दोस्त वही है जो, आपकी गलतियों पर पर्दा डालने की बजाय निष्पक्ष रूप से अपना पक्ष प्रस्तुत करें। आपको आपकी बुराईयों से अवगत कराए।

मैसूर पहले स्थान पर ,तो जयपुर को मिला 29 वां स्थान

जयपुर शहर देशभर का 29वां सबसे स्वच्छ शहर बन गया है। स्वच्छ भारत मिशन के तहत देश के 10 लाख से ज्यादा आबादी के 75 बड़े शहरों में हुए सर्वे में जयपुर को यह रैंक मिली है। पिछले साल अगस्त में हुए सर्वे में जयपुर को 370वां स्थान मिला था। पहले स्थान पर मैसूर ने कब्जा जमाया है। केंद्र सरकार की ओर से दिल्ली की एक निजी फर्म से यह सर्वे कराया गया था। इस टीम ने जनवरी में जयपुर में सफाई व्यवस्था को जांचा था। पूरे देशभर में अभियान 5 से 20 जनवरी तक चला था। अभियान की रिपोर्ट के आधार पर यह रैंक तय की गई है। क्वालिटी कंट्रोल ऑफ इंडिया ने खुले में शौच मुक्त, ठोस कचरा प्रबंधन, नैतिक शिक्षा एवं व्यवहार में परिवर्तन, घर-घर कचरा संग्रहण, शहर की सफाई व्यवस्था, कचरा परिवहन निस्तारण, पब्लिक एवं कम्युनिटी टॉयलेट और व्यक्तिगत शौचालयों की भौतिक स्थिति के आधार पर अपनी रिपोर्ट तैयार की थी। स्वच्छ भारत मिशन के तहत प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का लक्ष्य है कि 2019 तक देश के सभी शहरों को कचरा मुक्त बनाया जाए।

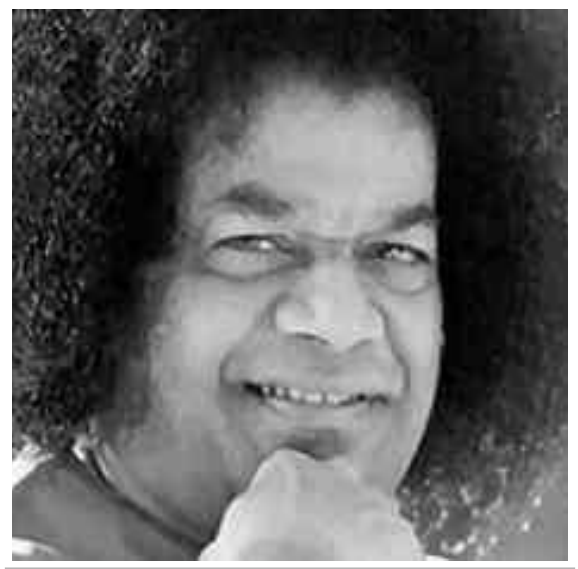

अपने को महान उदात्त विचारों, भव्य कल्पनाओं अनिर्वचनीय ज्योति से भर लो।

ज्ञान का वारिस शिष्य होता है पुत्र नही

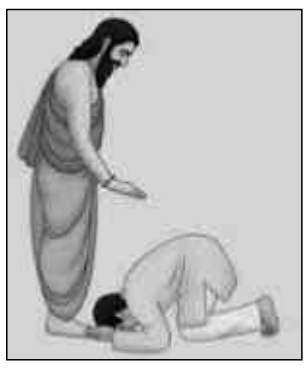

संत एकनाथ के आश्रम में बहुत से लोग ध्यान-साधना का अभ्यास करते थे। वहां एक किशोर पूरण भी था। उसकी मां विधवा थी, आश्रम में किसी तरह जीवन यापन कर रही थी। बेटे को पाल रही थी। पूरण से आश्रम के साधक मजाक में कहते थे कि पेट भरने के लिए अपनी मां के साथ वह यहां टिका है। पूरण इस पर ध्यान नहीं देता था। वह संत एकनाथ का प्रवचन ध्यान से सुनता, उस पर अमल करने की कोशिश करता।

एकनाथ अपने इस किशोर शिष्य की सेवा और श्रम से प्रसन्न रहते। जीवन के अंतिम समय जब एकनाथ इस दुनिया से विदा ले रहे थे तो उन्होंने अपने शिष्यों को बुलाया और कहा कि मैं जो ग्रंथ लिख रहा था उसे पूरण से पूरा करवा लेना। शिष्यों ने कहा कि जब आपके पुत्र हरि पंडित जैसे बड़े विद्वान मौजूद हैं, फिर पूरण को यह काम क्यों सौंपना चाहिए ?

इस पर एकनाथ ने कहा, 'हरि को मैं पुत्र मानता हूं, शिष्य नहीं। ज्ञान का वारिस शिष्य/शिष्या होता/होती है, पुत्र/पुत्री नहीं। इसलिए मैंने ग्रंथ पूरा करने के लिए पूरण का चयन किया है।' कहते हैं एकनाथ जी के दिवंगत होने के बाद उनके पुत्र हरि ने उनका प्रसिद्ध ग्रंथ पूरा करने की कोशिश की, पर नहीं हुआ। अंततः उसे पूरण ने पूरा किया।

कड़वे प्रवचन

बच्चे हमारी आशाओं के केन्द्र होते है। बच्चों की आंखों में हम अपना भविष्य पढ़ते है। उनकी मुस्कान के सहारे ही कोई भी परिवार, समाज और राष्ट्र फलता-फुलता है।

बच्चे को बच्चा इसलिए कहते है क्योंकि उसे बचाना पड़ता है। अथवा वह अभी तक बचा हुआ है। आज प्रत्येक घर हिंसक खिलौने का अजाबघर बना हुआ है। क्योंकि अब बच्चों को हिंसा के खिलौने ज्यादा पसंद आते है। पिस्तौल, टैंक, बन्दूक जैसे खिलौने आप बच्चों के हाथों में देख सकते हैं। इन खिलौने के सहारे उन्हें मरने-मारने का प्रशिक्षण दे रहे हैं। बाल पीढ़ी के मन में हिंसा घर कर रही है। यह किसी भी समाज और देश के लिए शुभ संकेत नहीं है। मैं कहता हूं कि आप बच्चों को संभाल लीजिए, देश खुद ब खुद संभल जायेगा।

-मुनि संत श्री तरूण सागर जी महाराज

भक्त कवि रविदास (जयंती विशेष)

भारत संतों की भूमि है. यहां समय-समय पर संतों और ज्ञानियों ने अपने ज्ञान से समाज में विकास की रफ्तार को मजबूत किया और एकता का प्रचार किया है। लेकिन संत बनना भी कोई आसान काम नहीं। इच्छाओं का अंत हो जाने पर ही मनुष्य संत की श्रेणी में आ सकता है। मीरा हो या कबीर सभी ने अपनी इच्छाओं को दरकिनार कर प्रभु भक्ति और समाज सेवा की वजह से ही इतनी अधिक प्रसिद्धी पाई। संत समाज के इसी भाव और भक्ति को और ऊंचे स्तर तक ले जाने का काम किया कवि रविदास जी ने। कवि रविदास ने साबित किया है कि भगवान की भक्ति के लिए आपको किसी ऊंची जाति या पंडित होने की जरूरत नहीं। भक्ति किसी जाति और नस्ल को नहीं देखती।

बचपन से ही रविदास साधु प्रकृति के थे और ये संतों की बड़ी सेवा करते थे। इस कारण इनके पिता रघु इन पर अक्सर नाराज हो जाते थे। इनकी संत-सेवा में सब कुछ अर्पित कर देने की प्रवृत्ति से क्रुद्ध होकर इनके पिता ने इन्हें घर से बाहर कर दिया और खर्च के लिए एक पैसा भी नहीं दिया। फिर भी रविदास साधुसेवी बने रहे। ये बडे अलमस्त-फक्कड़ थे। संसार के विषयों के प्रति इनमें जरा भी आसक्ति नहीं थी। ये अपनी गृहस्थी जूता-चप्पल बनाकर अत्यंत परिश्रम के साथ चलाते थे। इनकी पत्नी भी सती-साध्वी थीं।

संत रविदास की भक्ति से प्रभावित भक्तों की एक लंबी श्रृंखला है। रविदास के आदर्शों और उपदेशों को मानने वाले 'रैदास पंथी' कहलाते हैं। मन चंगा तो कठौती में गंगा यह उनकी पंक्तियां मनुष्य को बहुत कुछ सीखने का अवसर प्रदान करती है। 'रविदास के पद', 'नारद भक्ति सूत्र' और 'रविदास की बानी' उनके प्रमुख संग्रह हैं।

माघ मास के प्रारंभ होते ही संत रविदास के अनुयायी उनके जन्मोत्सव की तैयारी में जुट जाते हैं।

मानव मन के बोल

गया जी में पिण्डदान

गतांक से आगे.....

करे सदा सत्कर्म विहंसते।
कर्म योग अपनाना है।
रहे भावना ऐसी मेरी।
सरल सत्य व्यवहार करूं
बने जहाँ तक इस दुनिया में
औरों का उपकार करू।
औरों का उपकार करूं।

ये तो दोहे में लिखा है लाला औंरो का उपकार करूं, मैं बोल दूं। बाकी-हम कहाँ उपकार करते?बाबू, अपने जीवन को धन्य कर, अपने किसी पर ऐहसान नहीं करते। ये जो पूरे विश्व के बच्चे आ रहे है। अण्डमान निकोबार की सलोनी, आज भी मुझे याद आता है। उस कमरे में उसको कक्ष दिया था। अण्डमान निकोबार की सलोनी, ये अगरतला के बच्चे, जहां पर मैं दो बार गया था। मेघालय की राजधानी मेरे को शिलांग जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

शिलांग मेघालय की राजधानी। मुझ पर ईश्वर की कृपा हुई, मैं सिक्किम गया, गंगटोक अभी बाद की पंक्तियों में जब वह कालखण्ड आयेगा, उसका बहुत अच्छा आपको निवेदन करेंगे। आंखों देखी घटना, आंखों देखा हालचाल! एक-एक क्षण जैसे दृश्य मेरे सामने हैं। मुझे अवसर मिला, आसाम के दूर दराज के लोग गेमाजी! हां, मुझे याद है वो कलेक्टर साहब वहां के दौड़ रहे थे। मेरे स्वागत के लिये गुलदस्ता लिये खड़े थे। जिन कलेक्टर के दरवाजे पर कई बार हम जब बाहर खड़े रहते। कलक्टर साहब बुला लें, तब अन्दर चले जावें, मिल कर आवें। बाहर आये तो लोगों को बोले। हम कलक्टर साहब से मिलकर आये। बहुत अच्छी बात है।

वो ही गेमाजी के कलक्टर साहब, पर नारायण सेवा संस्थान के लिये बाबूड़ा, लोगों को लाईनों में लगवा रहे थे। मेरे आने के पहले और गेट पर खड़े होकर उन्होंने मुझे गुलदस्ता प्रदान किया। अपने पास से रूपया निकालकर के दान दिया। ये सेवा की महिमा।

क्रमश अगले अंक में ...

आज (माघ पूर्णिमा) को स्वयं भगवान नारायण का निवास होता है-गंगाजल में

हमारे शास्त्रों में माघ पूर्णिमा की बड़ी भारी महिमा बताई गयी है। माघ पूर्णिमा को पृथ्वी का दुर्लभ दिन माना गया है। ब्रह्मवैवर्तपुराण में उल्लेख है कि माघी पूर्णिमा पर स्वयं भगवान नारायण गंगाजल में निवास करते है। इस पावन घड़ी में कोई गंगाजल का स्पर्शमात्र भी कर दे तो उसे बैकुण्ठ की प्राप्ति होती है।

इस दिन सूर्योदय से पूर्व जल में भगवान का तेज मौजूद रहता है, देवताओं का यह तेज पाप का शमन करने वाला होता है। इस दिन सूर्योदय से पूर्व जब आकाश में पवित्र तारों का समूह मौजूद हो उस समय नदी में स्नान करने से घोर पाप भी धुल जाते हैं। माघ पूर्णिमा के विषय में कहा जाता है कि जो व्यक्ति तारों के छुपने के पूर्व स्नान करते हैं, उन्हें उत्तम फल की प्राप्ति होती है। जो तारों के छुपने के बाद पर सूर्योदय के पूर्व स्नान करते हैं, उन्हें माध्यम फल की प्राप्ति होती।

इसलिए इस पावन पर्व पर "ओम नमः भगवते वासुदेवाय नमः" का जाप करते हुए स्नान और दान करना चाहिए। माघ पूर्णिमा के दिन स्नान करने वाले पर भगवान विष्णु कि असीम कृपा रहती है। सुख-सौभाग्य, धन-संतान की प्राप्ति होती है इसलिए माघ स्नान पुण्यशाली माना गया है। पौराणिक मान्यता है कि कलयुग की शुरुआत माघ पूर्णिमा के दिन से ही हुई थी। इसलिए इस पूर्णिमा पर स्नान करने से कलियुग के सारे पाप धुल जाते हैं। साथ ही दान कर्म पुण्यदायी होता है।

इस दिन किए गए यज्ञ, तप तथा दान का विशेष महत्व होता है। गरीबो को भोजन, वस्त्र, गुड, कपास, घी, लड्डू फल, अन्न आदि का दान करना पुण्यदायक होता है।

प्रयाग में माघ महीने को कल्पवास में बीताने की परंपरा सदियों से चली आ रही है, जिसका विश्राम माघी पूर्णिमा के स्नान के साथ होता है। इसलिए इस दिन प्रयाग में स्नान करने से लाख गुणा फल की प्राप्ति होती है, क्योंकि यहां गंगा और यमुना का संगम होता है। गंगा नदी में स्नान करने से हजार गुणा फल की प्राप्ति होती है। अन्य नदियों और तालाबों में स्नान करने से सौ गुणा फल की प्राप्ति होती है।

इस पुण्य दिवस पर अगर आप प्रयाग में स्नान नहीं कर पाते हैं तो जहां भी स्नान करें वहां पुण्यदायिनी प्रयाग का मन ही मन ध्यान करके स्नान करना चाहिए। संगम स्थल पर एक मास तक कल्पवास करने वाले तीर्थयात्रियों के लिए यह तिथि विशेष पर्व है। माघी पूर्णिमा को एक मास का कल्पवास पूर्ण हो जाता है। इस पुण्य तिथि को सभी कल्पवासी सुबह गंगा स्नान कर गंगा माता की आरती और पूजा करते हैं तथा अपनी-अपनी कुटियों में आकर हवन करते हैं। फिर साधु संन्यासियों तथा ब्राह्मणों एवं भिक्षुओं को भोजन कराकर स्वयं भोजन करते हैं। इस प्रकार विधि-विधान से पूजा-अर्चना, स्नान तथा दान करने के बाद कल्पवासी अपने घरों को जाते हैं।

ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय ऊँ नमः शिवाय...

सम्पादकीय

आवागमन अबोध रूप से चल रहा था। सड़क के किनारे एक असहाय वृद्ध घायलावस्था में– प्रत्येक आने जाने वालों को याचना पूर्ण निगाहों से देख रहा था। लेकिन किसी ने वहाँ रूकने की हिम्मत नहीं उठाई। "यदि मैं यहां रूका तो लोग क्या समझेंगे ?क्या कहेंगे ?"

अन्ततः एक कार वाले सज्जन ने उन्हें देखा, कार धीमी की और कुछ आगे जाकर रुक गए। उन्होंने सोचा – "और भी तो लोग इधर से आ – जा रहे हैं। मैं ही क्यों ?" लेकिन अन्तर्द्वन्द्व चला – "उस वृद्ध को तत्काल सहायता की आवश्यकता है।"

"लेकिन मैंने कौनसा उसकी सहायता का ठेका ले रखा है।"

"कोई न कोई उसकी सहायता करेगा ही।"

"तो मैं क्यों फालतू का लफड़ा मोल लूं – पुलिस, अस्पताल, कचहरी न जाने क्या हो।"

"लेकिन मानव ही मानव की सहायता नही करेगा तो कौन करेगा।"

"पर लोग क्या सोचेंगे – कि मैं इतना बड़ा, और वह इतना छोटा.. .... और फिर कौनसा मुझे सोने का तमगा मिल जायगा।"

"पगले यह कार्य प्रमाणपत्र की लालसा में नहीं किया जाता है। और असली प्रमाणपत्र देने वाला है, उसके पास तुम्हारी पूरी फाइल है। यूं ही निकल गए तो उस फाइल में एक लाल निशान लग जायगा, दुसरी अवस्था में, उसमें स्वर्णाक्षरों से लिखा प्रमाणपत्र रख दिया जायगा।"

सज्जन ने कार पीछे की, वृद्ध के पास जाकर रूके और बोले – "चलो बाबा, मेरे साथ आओ।"

आइये, आप और हम भी प्रयास करें कि ऐसा कोई अवसर हाथ से न जाने पाए। और हां, बिना अन्तर्द्वन्द्व के।

आत्मज्ञान की कुंजी मिल गई

संत एकनाथ के गुरु श्री जर्नादन स्वामी ने हिसाब–किताब का काम उन्हें सौंप रखा था।

गुरु सेवा समझकर एकनाथ निष्ठापूर्वक उस काम में लगे रहते थे। ऐसे ही एक दिन वे हिसाब मिला रहे थे। हिसाब एक पाई से चूक रहा था। बार–बार कोशिश करने पर भी मिलान नहीं हो पा रहा था। इस तरह रात के तीन पहर बीत गए। उधर गुरुदेव की नींद आचानक खुली तो पाया कि एकनाथ अपने बिस्तर पर नहीं हैं, बल्कि वहीं दूसरे कमरे में दीए की रोशनी में हिसाब मिला रहे हैं। संयोग से हिसाब उसी समय मिल भी गया। एकनाथ की खुशी का पारावार नहीं था। वह खुशी–खुशी ताली बजाकर आनंदित होने लगे। गुरुदेव के पूछने पर संत एकनाथ ने अपनी एक पाई की भूल मिलने पर खुश होने की बात बतलाई। सुन कर गुरु जनार्दन स्वामी बोले, 'एक पाई की भूल मिलने पर तुम इतने प्रसन्न हो रहे हो। इस संसार में मनुष्य न जाने कितनी गलतियां करता रहता है, अगर उसे यह बात ध्यान में आ जाए और वह उन सब को ठीक कर ले तो मालूम नहीं उसे तब कितना हर्ष होगा।' संत एकनाथ ने गुरु के मुख से ये शब्द क्या सुने, उन्हें मानो आत्मज्ञान की कुंजी मिल गई। गुरु के इस एक वाक्य ने जीवन भर उनका पथ प्रदर्शन किया।

भूत भावन भगवान महाकालेश्वर उज्जैन की पावन धरा पर''

सिंहस्थ कुम्भ महापर्व-2016
नारायण सेवा संस्थान एवं सेवा परमो धर्म (ट्रस्ट), उदयपुर

30 दिवसीय विशाल सेवा, भक्ति, ज्ञान एवं अध्यात्म यज्ञ शिविर

!! दिनांक !! 22 अप्रैल से 21 मई–2016

!! समारोह स्थल !! मंगलनाथ, प्लोट नम्बर–83, 17–22,उज्जैन

उज्जैन की धरा पर हमारे प्रकल्प (दिनांक 22 अप्रैल से 21 मई तक)
विकलांगता जांच शिविर प्रतिदिन
प्रातः 9 बजे से 11 बजे

भोजन सहयोग (एक समय) 2100/– प्रतिदिन
छः या चार व्यक्ति सामूहिक आवास व्यवस्था 2100/–प्रतिदिन

आवास व्यवस्था (सेपरेट) 1500/– प्रति रुम

डोरमेट्री 500/– प्रतिदिन

मुख्य आयोजन एवं शाही स्नान
22 अप्रैल 2016 :सिहंस्थ प्रथम पर्व स्नान
1 से 6 मई–2016:पंचशनि यात्रा
3 मई,2016:वरूथिनी एकादशी
6 मई,2016:पर्व स्नान
9 मई,2016:अक्षय तृतीया
11 मई,2016:शंकराचार्य जी जयंती
15 मई,2016:वृषभ संक्रांति
17 मई,2016:मोहिनी एकादशी
19 मई,2016:प्रदोष पर्व
20 मई,2016:नृसिंह जयंती
21 मई,2016:शाही स्नान

आपश्री यजमान बन सकते हैं।
कथा मुख्य यजमान 1,51,000/–
प्रसादी वितरण यजमान प्रतिदिन 51,000/– (भण्डारा)
भोजन प्रसाद यजमान 11000/– (एक समय)
प्रतिदिन आरती यजमान 5,100/–
नाश्ता सहयोग 5,100/–
जल सहयोग प्रतिदिन 5,100/–
व्यास पूजन यजमान प्रतिदिन 2,100/–

रोगी भोजन सहयोग
50 रोगी प्रतिदिन–दोनों समय 22,000/–
50 रोगी प्रतिदिन–एक समय 11,000/–

विकलांग विवाह
पूर्ण विकलांग विवाह सौजन्य 11,00,000/–
पूर्ण कन्या दान 51,000/–
आंशिक कन्या दान 21,000/–

सम्पर्क करें Tel.:+91-294-6622222, 3990000,Mobile: 09649499999

इन प्रश्नों से बदल सकता है समस्याओं को देखने का नजरिया

हर व्यक्ति समस्या और परेशानी को अलग नजरिये से देखता है। आप भी दिक्कतों को अपने अनुसार देखते होंगे। यह ज्यादातर नकारात्मक ही होती है। आज कुछ ऐसे प्रश्नों के बारे में जानिए जिनके बारे में जानकारी होने से आप समस्याओं को अलग ही तरीके से देखने लगेंगे। जानिए इन प्रश्नों के बारे में.....

किसी चीज़ को लेकर आप अभी सकारात्मक और खुश रहना चाहते हैं तो वह क्या होगी ?

स्ट्रेस और निगेटिविटी से बाहर निकलने का एक ही हथियार है। वह है किसी ऐसी बात या व्यक्ति के बारे में सोचना जो सकारात्मक सोच रखता है और उसके साथ आप खुश रहते हैं। किस समस्या के लिए शुक्रगुज़ार हैं कि वे समस्या अभी नहीं घटी ?

कुछ समस्याएं बड़ी होती है और कुछ छोटी। छोटी–छोटी बातों को समस्या समझना ही नहीं चाहिए। जब कोई परेशानी आए तो ऐसी एक परेशानी या दिक्कत के बारे में सोचिए जो वाकई बहुत गंभीर है और आप भगवान के शुक्र गुजार है कि अभी नहीं हो रहा है। अभी आप किस बात के बारे में बिल्कुल नहीं सोचना चाहते और खुद को क्या अच्छा कहना चाहते हैं ?

जब समस्या से घिरे तो ऐसी बातों के बारे में सोचिए, जिन्हें आप खुद को कहना चाहते हैं। यकीनन ही वह शब्द अच्छे होंगे। इन शब्दों को खुद से जरूर कहिए। ऐसा करने से ताकत मिलेगी और समस्या का हल निकालने का औज़ार भी साबित होगा।

दूसरों का कसूर निकालकर अपनी जिम्मेदारियों से भागेंगे या एक्शन प्लान बनाकर आगे से आगे बढ़ना चाहते हैं?

पहले से समस्या में हैं, आप और समस्या बढ़ाना तो नहीं ही चाहते होंगे। इसलिए दूसरों का कसूर निकालकर अपनी जिम्मेदारियों से भागने की बजाय आगे बढ़ने के बारे में सोचिए। एक अच्छा एक्शन प्लान बनाइए और उस पर चलना शुरू कर दीजिए।

किन लोगों को माफ करना चाहते हैं ?

माफी देने का मतलब परिस्थियों को सुधारना नहीं है। और आप हर व्यक्ति या परिस्थिति को माफ करना या भूलाना भी नहीं चाहते हैं। लेकिन आप हर किसी को माफ करके खुद को आजाद करिए। अपने साथ रहिए। जैसे हैं वैसे ही रहिए और आगे बढ़ते जाइए।

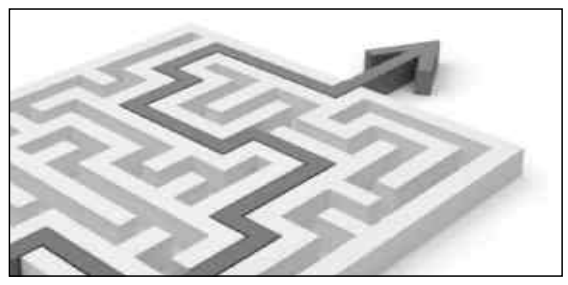

फलों की रानी – लीची

लीची का सदाबहार पेड़ स्ट्रॉबेरी परिवार का है। बसंत के आगमन के साथ इनमें बौर आ जाता है, फूलों के गुच्छे फलों में परिवर्तित हो जाते हैं। मध्य मई में ये फल लाल होने लगते हैं, यह इनके पकने की सूचना भी होती है। गुठली वाला खुरखुरे छिलके वाला फल मीठे गूदेदार होता है, इसमें हल्की खटास भी रहती है। ये सफेद गूदा शर्करा, विटामिन सी व पोटेशियम तत्वों से भरपूर होता है, तासीर में शीतल होता है।

लीची समशीतोष्ण जलवायु में होती है। भारत, चीन बांग्ला देश, पाकिस्तान, मलेशिया, इण्डोनेशिया, थाईलैंड, वियतनाम, ताईवान, फिलीपींस व दक्षिण अफ्रीका में खूब पैदा होती है। इसका मूल दक्षिणी चीन में माना जाता है। दस्तावेजों में दो हजार साल पहले इसकी वहां उपस्थिति दर्ज है।

लीची बहुत गुणकारी फल है। इसमें सेचुरेटेड फैट्स होते हैं। फाईबर की मौजूदगी के कारण मोटापा व वजन कम करने में सहायक बताया गया है। ब्रेस्ट कैंसर से लड़ने के गुण भी इसमें बताए जाते हैं। विटामिन सी रोग प्रतिरोधात्मक शक्तियों को बढ़ाता है।

बहुत से फल अपनी डाल से टूटने के बाद पकते हैं और उनका स्वाद बदल जाता है, लेकिन लीची का फल अगर कच्चा तोड़ा गया तो कच्चा ही रह जाएगा. इसका भंडारण भी 3 डिग्री सेंटीग्रेड के आसपास करना होता है और 60 दिनों तक कोल्ड स्टोर्स में रखा जा सकता है। आजकल वैज्ञानिक तौर तरीकों से इसके गूदे से बने अनेक उत्पाद लम्बे समय तक सुरक्षित रखे जाते हैं, जैसे जैम, रस, शरबत, स्क्वैश आदि। बाजार में इसकी आईसक्रीम भी उपलब्ध रहती है। नैनीताल के आसपास के क्षेत्रों में रामनगर की लीची सर्वश्रेष्ट मानी जाती है, जिसमें गूदा खूब होता है और गुठली बहुत छोटी होती है। लीची की गुठली गहरे भूरे रंग की होती है ये किसी प्रयोग में नहीं आती है, हाँ इससे नए पौधे तैयार किये जाते हैं।

सचमुच लीची प्रकृति द्वारा हमको दी गयी एक अनुपम सौगात है

मुट्ठी में तकदीर

गतांक से आगे.....

ये करतार की कृपा की कथा है और परब्रह्म परमात्मा की परम कृपा से, इस मंच पर बिराजमान सभी श्रेष्ठी, सन्त–महापुरूष, जगत् गुरू शंकराचार्य जी प्रभु, जगत गुरू रामानंद जी की कृपा बरस गई। सभी आचार्य महामण्डलेश्वर जी, हमारे बीच कुछ ही समय में पधारने वाले राज अरोड़ा साहब। यह कथा है करोड़ों वर्षों से, जब से निहारिकाऐं, हर निहारिका में हजारों सूर्य, हजारों चन्द्रमा, हजारों पृथ्वीयाँ, यह कथा है मानव धर्म की। यह कथा है व्यवहार की, आचरण की।

आईये मंगलाचरण में प्रणाम करें –

समय की यही है पुकार, करें हम सब से प्यार–

विश्वरूप राघव भगवान यहाँ–वहाँ, प्रकट कृपाला–दीन दयाला–कौशल्या हितकारी। यहाँ–वहाँ बालक को देखा, कौशल्या माताजी ने सोचा, मेरा राम सो रहा है। मैं परमात्मा जी के लिए प्रसाद बना दूँ और मेरे ईष्टदेव को नैवेध का भोग धारण करवा दूँ। और वहाँ जाकर देखा राम भगवान ईष्टदेव के रूप में प्रसाद ग्रहण कर रहे हैं। जो श्री राम भगवान, जब भुज ऊठा ये प्रण कीन, निशिचर हीन करूं, अधर्म का नाश करने के लिये, धर्म की रक्षा करने के लिये, हाँ महाराज ये मानव धर्म की कथा ये ब्रह्माण्ड की कथा, धर्म की कथा है, भगवान ने जब रावण रूपी अधर्म को समाप्त किया और जब भगवान श्री राघवेन्द्र, मेरे ठाकुर आयोध्या में पधारे, करोड़ों अयोध्यावासियों को लगा, मेरे से ही राम भगवान मिले रहे हैं, क्योंकि साँवरिया तेरे नाम हजार।

किणी नाम लिखूं कंकूपत्रि, पारब्रह्म परमात्मा "प्रबल प्रेम के पाले पड़कर, प्रभु को नियम बदलते देखा, अपना मान भले ही टल जाये। भक्त का मान न टलता देखा।" ये भक्तों की कथा ये सन्तों की कथा, ये महर्षियों की कथा, ये क्रान्तिकारियों की कथा, ये राष्ट्रधर्म की कथा, ये प्रेमधर्म की कथा, राघवेन्द्र भगवान के लिये–बोलिये रामचन्द्र भगवान की –जय–2। बोलिये विश्व रूप भगवान की –जय।

समय की यही है पुकार, करें हमें सब से प्यार–

करें हम सब से प्यार, करें हम सब से प्यार–

हां समय की यही है पुकार करें, हमें सब से प्यार।–

कण–कण में भगवान समाया–

हो रही जय–जयकार – करें हम सब से प्यार।–

नदियाँ, धरती, अम्बर, सागर–,

मुख में संसार–करें हम सब से प्यार।।

समय की .....

ब्रह्मा मुरारी त्रिपुरान्तकारी

भानु शशि, भूमि सुतो बुधश्च

गुरूश्च शुक्रः, शनि राहु केतवः कुर्वन्तु सर्वे

मम् सर्व कार्यम्। –

चरण कमल में रखना हमको, रखना सर पर हाथ।

कृपा करो श्रीनाथ जी, बिगड़ी बनाओ बात।–

जिनकी जटाओं में गंगा, और तन पर मृगमाल है जिनके एक क्षण ध्यान से, कष्ट दूर हो जाते हैं। जो सृष्टि के रक्षक हैं, जो एकलिंग कहलाते हैं। गौरी वर त्रिनेत्रधारी को शत्–शत् शीश झुकाते हैं।–

बोलिये नीलकण्ठ महादेव की –जय हो।

जिन्होंने आपके, हमारे कष्टों को, विकारों को, समाप्त करने के लिये जहर पीया, विष का पान करके जिन्होंने हमें अमृत पिलाया, ये प्यार का, एकता का, परिवार का, समाज का, राष्ट्र का, ये नेकी का अमृत, ये मीठी जुबान का अमृत, ये अच्छे कानों से सत्संग सुनने का अमृत प्रभु, ऐसे शंकर भगवान, भीण्डेश्वर महादेव, महाकालेश्वर भगवान, नील कण्ठ प्रभु, बाबा काशी विश्वनाथ भगवान, सोमनाथ भगवान, ओम नमः शिवायः

ओम नमः शिवायः –

हर–हर महादेव के साथ ये मानव धर्म की कथा, ये ब्रह्माण्ड धर्म की कथा, ये उदास चेहरे को प्रसन्नता में बदलने की कथा।

क्रमशः.....

मुख्य कार्यकारी अधिकारी–कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक–प्रशान्त अग्रवाल, जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा
मार्गदर्शिका–कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल
सलाहक प्रबन्धक–मोहन लाल गाडरी
संपादक–लक्ष्मीलाल गाडरी
संपादन सहयोगी–घनश्याम सिंह राठौड़

मुद्रक–न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, प्रकाशक–कमलादेवी, मुद्रण स्थल–13, भोपा मगरी, बी.एम.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर–3 उदयपुर (राज.), प्रकाशन स्थल– ई–डी–71 बप्पा रावल नगर, हिरण मगरी, सेक्टर–6, उदयपुर (राज.)
सम्पादक–लक्ष्मीलाल गाडरी, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2014/59353 टेलिफोन नं. – 0294–6622222 मो.–09587720000,09928022275,09214657807,09785039524 www.mannkijeet.com, mankijeet2015@gmail.com